ISSN2321-5372

अजमेर में सम्पन्न आंतर भारती की बैठक में प्रमुख अतिथि के रूप में पूर्व विधायक, आर्य सदाविजयजी के विद्यार्थी डॉ. गोपालभाई बाहेती

जोधपुर में आंतर भारती टीम के साथ मार्गदर्शन करती हुअी मा. आशा बोथरा

जयपुर राज्यस्थान के गांधी गोपाल भट्ट की समाधि परिसर में सवाई सिंह ने किया स्वागत

राजू जांगीड के रतनास गाव में पांडुरंग नाडकर्णी एवं अमर हबीब ने राजू जांगीड के मातापिता का हृद्य सत्कार किया, साथ में डॉ. डी.एस. कोरे, आशा अमर हबीब

आंतर भारती

ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के
युवा अभियान का सशक्त
अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच

www.antarbharati.org.in

* वर्ष : ६० * अंक ६ * जून २०२३* १० रुपये * वार्षिक : १०० रुपये * आजीवन : १००० रुपये

आंतर भारती की अजमेर में हुअी राष्ट्रीय बैठक /यात्रा की कुछ झांकियाँ !

बैठक में अध्यक्षीय भाषण करते हुए
राष्ट्रीय अध्यक्ष प्राचार्य पांडुरंग नाडकर्णी

सप्तसूत्री कार्यक्रम रखते हुए
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष अमर हबीब

वक्तव्य देते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
संगीता देशमुख

गतवर्षीय अहवाल जमाखर्च बजट प्रस्तुत
करते हुए राष्ट्रीय सचिव डॉ. डी.एस.कोरे

वक्तव्य देते हुए हर्षद रावल

वक्तव्य देते हुए संविद्या पंड्या

वक्तव्य देते हुए अलका वालचाले

वक्तव्य देते हुए ए. सुहास

आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

आंतर भारती स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

प्रेरक, संवर्ध्दक संपादक
स्व. यदुनाथ थत्ते

संस्थाध्यक्ष/ पूर्व संपादक
स्व. सदाविजय आर्य

▪ कार्यकारी संपादक
प्राचार्य सुभाष वर्धमान शास्त्री
सुदीक्षा, ९ इंडस्ट्रीयल इस्टेट
होटगी रोड,
सोलापूर – ४१३००३ (महा.)
मो. ९८९०६११४०१
E-mail : subhashvshastri@gmail.com

▪ प्रधान संपादक
डॉ. सी. जय शंकर बाबु
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग,
पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेट,
पुदुच्चेरी–६०५०१४
मो. ९४४२०७१४०७
E-mail : editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती साने गुरूजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति को सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है ।

विश्वस्त – कोषाध्यक्ष
डॉ. उमाकांत चनशेट्टी
मु.पो. बोरामणी ४१३२३८
जि.सोलापूर–४१३००३ (महा)
मो. ९५५२६३७९००

Visit US : antarbharati.org.in

प्रबंध कार्यालय
आन्तर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहा. (महा.) ४१३५२२

संपादक
ज्योतिराव लढके

मार्गदर्शक
▪ डॉ. इरेश स्वामी ▪ अमर हबीब ▪ पांडुरंग नाडकर्णी ▪

सहयोगी – मधुश्री आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक/संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें ।

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji Committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the potentiality, Skills, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक पत्रिका) प्रकाशक कार्याध्यक्ष, आंतर भारती द्वारा मुद्रक मॅजिक पब्लिकेशंस लातूर के लिए मुद्रित कर आंतर भारती संकुल औरादशहाजानी से प्रकाशित की ।

आंतर भारती - जून-२०२३
इस अंक में

१) संपादकीय : साने गुरुजी के अहिंसा पथ के कुछ मायने - ३

२) वेमना का तत्वज्ञान.... - ५

३) बसव वचन... - ६

४) तिरुवल्लुवर वाणी... - ७

५) किसी के सपनों से आंखें जोड दो.... - ८

६) प्रिन्स हॅरी की मेगन ..... - १२

७) आंतर भारती की राजस्थान यात्रा तप्त भूमि में ... - १५

८) समाचार - २१

समाचार भारती

आंतर भारती दिन सम्पन्न

वसमतः –यहां के मा.अनंत साधु के घर १० मई २०२३ को आंतर भारती दिन मनाया गया । इस समारोह में आदर्श शिक्षक पुरस्कार प्राप्त मा. शाम रावळे तथा आंतर भारती के आजीवन सदस्य मा. आर.डी. देशमुख (कबड्डी पंच नियुक्ति के उपलक्ष्य में) इनका अध्यक्ष सुभाष लालपोतू के शुभहस्तों से सम्मान किया गया । इस अवसर पर मधुकर साकळकर, विश्वास कदम तथा नागसेन कांबळे उपस्थित थे ।

संपादकीय

साने गुरुजी के अहिंसा पथ के कुछ मायने

– –डॉ. सी. जय शंकर बाबु

साने गुरुजी की मान्यता है कि 'अहिंसा' – भारतीय संस्कृति का जीवनभूत तत्व है। यह तत्व भारतीय लोगों के रोम–रोम में समाया हुआ है। वे आगे यह भी कहते हैं कि भारतीय वायु मानो अहिंसा की वायु है। आज इधर–उधर से हिंसा और विनाश लीलाओं की खबरें सुनने से हमें साने गुरुजी के अहिंसक चिंतन पर पुनः ध्यान देने की आवश्यकता है।

साने गुरुजी कहते हैं कि सदियों से हिंसा जब भी हुई भक्षण और रक्षण के लिए ही हुई है। यज्ञ को भी हिंसा के कारण के रूप में दिखाते हुए हुए वे कहते हैं कि ईश्वर को आहुति देना भी भक्षण के रूप में हिंसा का कारक बन जाता है। प्राचीन समय में नर भक्षक मनुष्य में जब यह विचार आया कि वह दूसरे को दुःख दे रहा है, इस सोच ने उसे बदल दिया। वह अहिंसक बन गया। इस चर्चा के विस्तार में जाते हुए साने गुरु जी कहते हैं कि मनुष्यता का यह पहला पाठ है कि मनुष्य मनुष्य को न खाये और मनुष्य को मारे नहीं। गुरुजी यह सवाल करते हैं कि यज्ञ की रक्षा के लिए राम–लक्ष्मण को राक्षसों को मारने के लिए विश्वामित्र स्वयं अहिंसक कहलाकर दूसरों से हिंसा करवाया तो वह अहिंसक कैसे हो सकता है? इसी बात को विस्तर देते हुए वे कहते हैं कि क्षत्रियों को हिंसा का काम सौंपकर वे हिंसक होकर बलवान हो गये तो शत्रु न रहे तो प्रजा को ही सताने लगे। हिंसक क्षत्रियों को मिटाने के लक्ष्य से परशुराम स्वयं बड़े हिंसक साबित हुए कहते हुए गुरुजी यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि अच्छे उद्देश्य के कार्य के लिए गलत रास्ता नहीं चुनना चाहिए। हिंसा से हिंसा बंद नहीं हो सकती... युद्ध से युद्ध बंद नहीं हो सकते हैं। क्षमा और प्रेम के बल को स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधी जी के अहिंसा व्रत की याद दिलाते हैं। आज रूस और उक्रेन के बीच युद्ध हो या दुनिया में कहीं भी एक दूसरे देश के बीच शत्रुता के संदर्भ हो, उन्हें दूर करने में हिंसा की जगह अहिंसा पथ को अपनाना ही श्रेयस्कर होगा।

साने गुरुजी ने अहिंसा की बात को जितनी सहजता से स्पष्ट किया है, हिंसा को आज उतनी ही सरलता से अपनाकर हिंसा फैलाने वाले जीव बढ़ रहे हैं। अपने स्वार्थ के लिए हिंसा को बढ़ाने वालों से हमें सजग होने की चेतना साने गुरुजी ने दी थी। हमें उस दिशा में कार्य करने की ज़रूरत है। हमारे चारों ओर जहाँ भी हिंसा बढ़ रही है, जहाँ भी मनुष्य के समक्ष दुःख यातनाओं का स्थितियाँ पैदा हो रही हैं या किन्हीं के द्वारा पैदा की जा रही हैं, उन स्थितयों से मुक्ति के लिए हमें अहिंसक उपायों को अपनाने की अपेक्षा है।

'आंतर भारती' आत्मीयता का आंदोलन है। मानव के मन और व्यवहार में आत्मीयता को देख पाने के साने गुरुजी के सपने को साकार करने का सबल आंदोलन है । इस आंदोलन के साथ जुड़े सभी कार्यकर्ता इसी दृष्टि से अपनादायित्व निभाते हुए उन मूल्यों की व्यावहारिक व्याप्ति में निष्ठापूर्वक संलग्न हैं।

पिछले महीने राजस्थान की यात्रा के सफल आयोजन के बाद अगले वर्ष बंगाल यात्रा के संबंध में विचार पर आंतर भारती के विश्वस्तमंडल के बीच जो विमर्श शुरू हुआ है उसका मूल उद्देश्य आंतर भारती के आत्मीयता आंदोलन को विस्तार देने का ही है। प्रेम के बल पर अहिंसा की व्याप्ति को महत्व देने वाले साने गुरुजी कीवैचारिक दुनिया को विस्तार देने के हमारे प्रयासों की सफलता के सूत्र स्वयं उसी आत्मीयता के मंत्र में है। आत्मीयता के इस आंदोलन को विस्तार देने से हिंसा-मुक्त समाज को देख पाने की हमारी आशा पूरी होगी। भले ही कोई अपने स्वार्थ के लिए हिंसा मार्ग को अपनाएं, जन-जन के मन में अहिंसा, आत्मीयता, प्रेम वास हो अपेक्षित चेतना हो तो निश्चय ही अहिंसक समाज को ही विस्तार मिलेगा। अहिंसा परम धर्म की बात तभी सच साबित होगी। धर्म के नाम पर हिंसा की सामाप्ति का सूत्र भी यही है।

आज हमारे समक्षउपस्थित हो रही कई समस्याओं, चुनौतियों के लिए साने गुरुजी के चिंतन में कई स्पष्ट समाधान हैं, जिन्हें सही मायने समझकर, समझाकर प्रसारित करने की आवश्यकता है, जिससे उन समस्याओं के लिए समाधान संभव है। आंतर भारती के कार्यकर्ताओं को इसी दृष्टि से बढ़ाने की आवश्यकता है।

विश्व अभिभावक दिवस (१ जून), विश्व साइकिल दिवस (३ जून), आक्रामकता के शिकार मासूम बच्चों का अंतरराष्ट्रीय दिवस (४ जून), विश्व पर्यावरण दिवस (५ जून), विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस ((७ जून), विश्व महासागर दिवस (८ जून), बाल श्रम विरोधी दिवस (१२ जून), विश्व रक्तदाता दिवस (१४ जून), विश्व पवन दिवस (१५ जून),मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने के लिए विश्व दिवस (१७ जून), विश्व शरणार्थी दिवस, पूरी जगन्नाथ रथ यात्रा (२० जून), विश्व संगीत दिवस, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (२१ जून), अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस, संयुक्त राष्ट्र लोक सेवा दिवस (२३ जून), नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस (२६ जून), बक्रीद (२९ जून) आदि के अवसर पर अग्रिम शुभकामनाओं सहित...

वेमना का तत्व-चिंतन

तेलुगु मूल – योगी वेमना

(देवनागरी लिप्यंतरण, हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

कुंड चिल्लिपडिन गुड्डु दोपगवच्चु
पनिकि वीलुपडुनु बागुगानु
कूलबडिन नरुडु कुदुरुट यरुदया,
विश्वदाभिराम विनुर वेम ।

मिट्टी के घड़े में छेद पड़ने से कपड़ा घुसा सकते हैं
वह काम चलाने लायक बेहतर बन जाएगा
विमुख मूर्ख का सुधरना नामुमकिन
विश्वदाभिराम! सुनरे वेमा !

व्याख्या–यदि मिट्टी के बरतन में कोई छेद पड़ जाता है तो कपड़ा घुसाकर बेहतर ढंग से काम चला सकते हैं । मगर मूर्ख से कोई काम नहीं ले सकते हैं, जो सज्जनों के उपदेशों से विमुख होकर रह जाता है । वेमना का मानना है कि नाज़ुक बरतन को भी ठीक करके काम चला सकते हैं मगर मूर्ख को समझाना मुश्किल है ।

महात्मा बसवेश्वर वचन

।। मूळ कन्नड वचन ।।

अर्थरेखे विद्दल्ली फलवेनू ?
हंदीय कैयल्ली चंद्रायुध विद्दू फलवेनु ?
अंधकन कैयल्ली दर्पविद्दू फलवेनु ?
नम्म कूडल संगन शरणनरियदवर
कैयल्ली लिंगविद्दू फलवेनु ?

हिंदी काव्यानुवाद

मात्र धनरेषा होने से क्या फायदा
आयुष्य रेखा अगर न हो तो
वराह के हाथ चंद्रायुध होने से क्या फायदा
अंधे के हाथ में आईना होने से क्या फायदा
हमारे शरण संगमदेव के शरण न जानेवालों के
हाथ में लिंग होकर भी क्या फायदा

भाष्य

अपने जीवन में कार्यक्षम आरोग्यवान शरीर का होना आवश्यक है, कर्मेंद्रिय, ज्ञानेंद्रिय अच्छी अवस्था में होना जरूरी है । पैर, आँखे कान इ. भी कार्यक्षम हो, तभी अपनी संपत्ति का सही उपयोग हो सकता है । सुअर जैसे गंदे निरर्थक प्राणी के हाथ में चंद्रायुध देने का क्या फायदा हो सकता है । अंधे की दृष्टि गायब है, देखने में असमर्थ है, ऐसे व्यक्ति को आईना देने से क्या फायदा ? उसीप्रकार धर्म का, तत्वों का, सत्कर्मों का आचरण– मूल्य ही न जानते हुए लिंग धारण करता है तो उसका भी कोई प्रयोजन नहीं !

डॉ इरेश सदाशिव स्वामी
विद्या, १२ ब्रहमचैतन्य नगर,
विजयपुर रस्ता, सोलापूर–४१३००४
भ्रमण : ९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल

तमिल मूल – संत तिरुवल्लुवर

(देवनागरी लिप्यंतरण, एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

प्रथमखंड – अरत्तुपाल (धर्मखंड)
तुऱवऱवियल्(संन्यास–धर्म)
अध्याय २५. अरुळुडैमै(दया)

तेरुळादान् मेय्प्पोरुळ् कण्डट्राल् तेरिन्
अरुळादान् चेय्युम् अऱम् । (कुरल – २४९)

निर्दयी से न
आशा धर्म–काज की
मूर्ख से ज्ञान

भावार्थ –दयाविहीन व्यक्ति से धर्म–कार्य की अपेक्षा करना उसी के बराबर है जैसे कि अविवेकी से सत्यज्ञान की अपेक्षा करना । दया कोबड़ा महत्व देनेवाले तिरुवल्लुवर का यहमानना है कि दयाविहीन व्यक्ति द्वारा कोई भी पुण्य कार्य नहीं हो सकता है, जिस तरह मूर्ख से हम किसी भी बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य की आशा नहीं कर सकते हैं ।

वलियार्मुन् तन्नै निनैक्कतान् तन्निन्
मेलियार्मेल् चेल्लुम् इडत्तु। (कुरल – २५०)

दीन प्रहारी
गर्व? सोचो खुद की
बली के आगे ।

भावार्थ –निर्दयी होकर जब दुर्बल का दमनकर गर्व का अनुभव करते हैं तो उसे यह अवश्य सोचना चाहिए कि वह खुद अपने से बलवान के समक्ष कैसा दयनीय बन जाता है ।तिरुवल्लुवर का कहना है कि दयाविहीन बनकर हम दूसरों का दमन करते हैं तो हमें यह स्मरण होना चाहिए कि हम अपने से बलवान जब हम पर अत्याचार करें तो हम स्वयं उसके सामने कैसी स्थिति में होते हैं । तिरुवल्लुवर का मानना है कि जिसकी संपत्ति नष्ट हो जाती है वह पुनः संपन्न बन सकता है जबकि दयाविहीन निष्करुण की स्तिथि में कभी सुधार संभव नहीं है ।

प्रेरणा भारती

किसी के सपनों से आंखें जोड दो....

– महारूद्र मंगनाळे

दुःख तुम्हें क्या तोडेगा,
तुम दुःख को तोड दो ।
केवल अपनी आंखे,
किसी के सपनों जोड दो ।।

रवी वापटला, मेरे युवा संवेदनशील, सेवाभावी वृत्ति के मित्र ने, एच.आई.व्ही. बाधित बच्चों को जिलाया, संभाला ही नहीं, अपितु सर्वसामान्य युवाओं जैसा जिन्दा रखा । स्वप्न देखना सिखाया । उनके स्वप्नों के साथ अपना सारा जीवन जोड दिया । रवी पत्रकार की पदवी लेकर '' दैनिक संचार के लातूर जिला प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए थे । स्थानिक पत्रकारिता, महाविद्यालय में प्राध्यापिकी भी–की, उन्होंने समवयस्क मित्र–सखियों को लेकर आम्ही सेवक (हम सेवक) यह संस्था भी स्थापित की । अचानक एच.आई.व्ही संक्रमित बालक की अवहेलना के कारण मृत्यु की घटना देखकर, इस समस्या के लिए अपना जीवन समर्पण करने का निश्चय रवि ने किया । लातूर से १२ किलो मीटर अन्तर पर हसेगाव शनिश्वर मुक्ता, इस मित्र के दादा ने ६ एकड जमीन दान के रूप में दी । वहाँ बंजर जमीन पर रवी अकेला रहने लगा । रवी ने पाठशालाओं में जा–जाकर बच्चों से जेबखर्च के पैसे प्राप्त किए । इसी बहाने बच्चों में एड्स के बारे में जागृति की गर्मी सर्दी, बरखा तूफान मे रवि की रावटी यही एकमात्र आसरा था । वहाँ बीज भी नहीं थे । साथ में केवल एक कुत्ता था । रात बेरात मोटर सायकल से लातूर–हसेगाव आना जाना करते थे । पत्रकरिता की नौकरी यही आजीविका का साधन था ।

थोडे पैसे जमा होने पर हसेगाव की छह एकड जमीन पर रवी ने दो कमरे बनाना शुरू किया । परन्तु गांव के कुछ मित्रशत्रु लोगों को यहाँ एच.आय.व्ही. संक्रमितों के लिए निवासस्थान बनाने देना नहीं था। उन्होंने विविध अफवाह फैलाई, गांव के सभी बच्चों को एच.आय.व्ही हो जाएगा, यह झूठी खबर लोगों को सच्ची लगी । कमरे का बांधकाम छत तक आ गया था । एक दिन अंधेरे में रात को जे.सी.बी. मशीन लेकर चालीस–पचास लोग आए । रवि को मारा, गालियाँ दी । गांव छोड कर नहीं गया तो तुझे मार डालेंगे, ऐसी धमकी दी । जे.सी.बी. मशीन चलाकर वह बांधकाम तोड दिया । वहाँ का सारा सामान ले गए रवि की जगह पर कोई दूसरा होता तो वह घबरा कर वहाँ से चला जाता, परन्तु रवि ने इन काम के लिए जान की बाजी लगाने का निश्चय किया तथा वह साकार भी किया ।

बंजर जमीन पर दो कमरे बांधे । उस समय वहाँ छह एकड जमीन पर एक भी पौधा नहीं था । रवि ने युवाओं के सेवा–श्रम–शिबीर लेकर वहाँ आम, नारियल आदि के पेड लगाए । धीरे धीरे सेवालय को (आकार) रूप आने लगा कुछ दानी लोगों ने दो तीन छोटी छोटी कुटियां बना दी। एच.आय.व्ही संक्रमित बच्चों के लिए निवासी बालगृह शुरू होने की जानकारी फैल गई । गरजमंद लोग संपर्क करने लगे। बालकल्याण समिति की अनुमति से बच्चे आने लगे । खर्च बढ गया रविने अभिभावकों के माध्यम से लोगों को इस काम में सहभागी कर लिया । देखते देखते १५,२० बच्चे हो गए। उन्हें हसेगाव की जिलापरिषद शाला में प्रवेश दिया गया । परन्तु सेवालय के मित्रशत्रुओं ने यहाँ भी रोडा डाला सेवालय के लडके, लडकियों के कारण गांव के निरोगी बच्चों को भी एच.आय.व्ही हो सकता है ऐसी अफवाह फैला दी । घबराए हुए ग्रामवासियों के संक्रमित बच्चों के साथ हमारे बच्चे नहीं सीखेंगे ऐसा कहकर शाला में भेजना बन्द किया । वैधानिक संकट खडा कर दिया । प्रशासन ने रवी के समक्ष संक्रमित बच्चों की अलग शाला देने का प्रस्ताव रखा । परन्तु एच.आय.व्ही. संक्रमित बालकों के जन्मसिध्द अधिकार का प्रश्न होने से रवी ने उसे अस्वीकार किया । माध्यम (मीडिया) ने यह प्रश्न सामने लाया, देशभर में चर्चा हुई । बीबीसी ने भी इस विषय को लिया । एच.आय.व्ही. संसर्ग जन्य रोग न होने से इस बच्चों को अन्य बच्चों के साथ सिखा सकते हैं, ऐसा आदेश केन्द्र सरकार ने दिया। परन्तु इस समस्या को सुलझाने के लिए इतना काफी नहीं था । रवी ने हसेगाव के लोगों से प्रत्यक्ष मिलकर यह विषय समझाकर बताया । सारी जिम्मेवारी ली । अन्त में सेवालय के तथा ग्रामस्थ बच्चे एकसाथ सीखने लगे । रवी ने यह बडी तात्विक तथा कानूनी लडाई जीती।

इसी बीच यहाँ संसदसदस्य निधि से सभागृह तथा कुछ कमरे बनाए गए । पानी की आवश्यकता पूर्ति के लिए श्रमदानद्वारा खेत में कुआं खोदा गया । चारो तरफ हरियाली बढ गई । उन दिनों दस बारह वर्ष के बच्चे मर जाते थे । परन्तु दिन ब दिन अधिक अच्छी दवाइयां आने लगी । सेवालय में बच्चों को पोषक आहार तथा आरोग्यदायी, परिवारिक वातावरण मिलने से उनका स्वास्थ्य तेजी से सुधरने लगा । कई लडके – लडकियां दसवी पास हो गए । उन्होंने उम्र के अठ्ठारह वर्ष पूरे कर लिये वे समझदार हो गए । बालगृह में अट्ठारह वर्षतक के बच्चों को रख सकते हैं तो इन समझदार बच्चों को कहाँ भेजा जाय ? समाज में तो उनके लिए कोई जगह नहीं थी। अन्त में इनका क्या करें ? इस समस्या पर रवी ने विचार करके Happy Indian Village (HIV) इस दूसरे प्रकल्प को शुरू किया ।

समस्या स्थान तथा पैसों की थी । इसीमें ''सेवालय म्युजिक शो'' की कल्पना सामने आई । सेवालय के ४० लडके लडकियों का म्युजिक शो तैयार हुआ । पहला शो २०१५ में पुणे के बालगंधर्व सभागृह में प्रस्तुत किया गया । एच.आय.व्ही. संक्रमित बच्चों के नृत्य, अभिनय, कला को प्रेक्षकों ने बहुत पसन्द किया । पैसों का एक नया स्रोत निर्माण हुआ। सबसे महत्व पूर्ण बात यह कि इससे बच्चों के स्वास्थ्य में विलक्षण सुधार हुआ । उनकी सीडीफोर (सफेदपेशियों की संख्या) बढ गई । महाराष्ट्रभर में कार्यक्रम शुरू हो गए। सेवालय के आसपास के पहाडों पर कइयों के छोटे छोटे जमीन के टुकडे पडे हुए थे । जमीन खेती के योग्य नहीं थी । कईयों को तो उनकी जमीन की चतुर्सीमा भी मालूम नहीं थी । रवि ने नए प्रकल्प के लिए जमीन मांगी तो किसान तैयार हो गए । संस्था ने २०१५ में नौ गुंटे जमीन ली । आज संस्था के पास इस बंजरभूमि पर तकरीबन १४ जमीन है । धीरे धीरे यहाँ भी पेड लगाए गए । बच्चों के रहने के लिए कमरे बांधे गए । बहुउद्देशिय सेवाभवन में रसोईघर भी बना लिया गया ।

बाहर से काली मिट्टी लाकर दो तीन एकड जमीन तैयार कर ली गई । वहाँ साग सब्जियाँ उगाई जाने लगी । टमाटर करेले की विक्री से उत्पन्न मिलने लगा । खाने के लिए मक्का, ज्वार, मूंगफलीगन्ना आदि की बुआई उलट पुलटकर करते थे । विलेजपर जानवरों के लिए गोठा है । दूध देने वाली तीन भैसें पांच गायें हैं । बच्चों के दूध दही खाने को मिलता है । इन जानवरों का गोबर खेती के लिए उपयोगी होता है । बच्चों के लिए दो-तीन सौ मुर्गियां पाली है । उसको लगकर बच्चों के लिए जिम बनाया है । सेवालय के केसर आम की बिक्री से पैसे मिलने लगे । पर्यावरण पूरक गणपती मूर्ति है। पुरानी साडियों से थैलियां, पैर पोंछने के बनाने से कुछ खर्चे में सहायता होने लगी । सेवालय की रोपवाटिका में विभिन्न प्रकार के फूलों के तथा शोभा के पौधे तैयार किए जाते हैं । आहाते में अनार, अमरूद, नींबू, सीताफल के नए पौधे लगाए ।

लाभार्थियों ने स्वयं का आर्थिक स्रोत तथा मेहनत से यह गाव बसाया है । पहले दिन से स्वावलंबी होने की दृष्टि से प्रत्येक उपक्रम योजनाएं चलाई जाती हैं । फिर भी नई नई समस्याएं आती ही रहती हैं । युवा कन्या तथा युवकों का विवाह करने की आवश्यकता थी । बचपन से सेवालय में पलेबढे बच्चे-बच्चियों का विवाह नहीं कराना यह ध्येय रखा । अन्य संस्थाओं के एच.आय.व्ही. संक्रमित विवाहयोग्य बच्चे बच्चियों की जानकारी प्राप्त करके, आपस की रजामंदी से विवाह कराए गए । आज तक इस संस्था की ओर से कालबाह्य रूढि परंपरा टाल कर एच.आय.व्ही. संक्रमित १६ दम्पतियों के विवाह हुए हैं । इस प्रकार का

यह अकेला उदाहरण होगा । इन विवाहितों की गृहस्थी सुखपूर्वक हैं । इन दम्पतियों को बच्चे होते है वे नेगेटिव अर्थात एच.आय.व्ही. मुक्त होते है । उसके लिए गर्भवती माता को दवाई दी जाती है । रवी अबतक ऐसे आठ नौ एच.आय.व्ही. मुक्त बच्चों के दादा–नाना बन गए हैं । इस बार १४ फरवरी को ऐसे चार विवाह सम्पन्न हुए ।

कोरोना के दस महीने सबके ही कठोर परीक्षा के थे । पहले से ही संसर्ग न हो इसके लिए संस्था ने पूरी सावधानी बरती सेवालय को इस व्हिलेज में दूसरें लोगों का प्रवेश बन्द करना पडा । सेवालय म्युजिक शो के पूर्व नियोजित आठ–दस कार्यक्रम हुए। प्रतिमाह कुछ पैसे देने वाले पालकों की संस्था भी कम हो गई । सारे आर्थिक स्रोत कम हो गए । फिर भी रवी ने इस संकट को अवसर में रूपांतरित किया । बीस पच्चीस लडके–लडकियों को साथ लेकर व्हिलेजपर शेततळ (तालाब) रास्ते तथा आवश्यक निर्माण कार्य कर लिया । बच्चों को मेहनत की कीमत समझ में आई । इससे सब बच्चों का स्वास्थ्य ठीक रहने लगा । एक भी बच्चे को अस्पताल ले जाना नहीं पडा । कोरोना के प्रारम्भ में मास्क की बहुत मांग थी । हॅपी व्हिलेज की दस–बारह कन्याएं सिलाई का अच्छा काम करती हैं । रात दिन काम करके इन लडकियों ने सूती कपडे के हजार मास्क बनाए । तकरीबन एक लाख रूपयों के मास्क की बिक्री हुई ।

यह संस्था लोगों के दान पर, सहायता पर चलती है । समयसमय पर इस संस्था ने समाज को कुछ न कुछ देने का प्रयत्न किया है । अकाल में हसेगाव के ग्रामवासियों के पानी के लिए बुरे हाल थे तब संस्था ने अपने टेंकर के द्वारा लोगों को मुफ्त पानी दिया । सागसब्जी का भरपूर उत्पादन कर हसेगाव तथा लातूर के सेवालय मित्रों, तथा हितचिंतकों तक पहुंचाया । गरजमंद तथा पुलिस, महसूल तथा आरोग्य क्षेत्र के कर्मचारियों को मुफ्त मास्क दिए ।

आज चारोतरफ निराशा, नकारात्मकता का वातावरण हैं, ऐसे समय में रवी बापटला नाम के एक उच्चशिक्षित युवक अपना सुख समृध्द जीवन छोडकर एच.आय.व्ही. संक्रमितों के पुनर्वसन के लिए स्वयं को झोंक देता है । बंजर जमीन पर नंदनवन बनाता है । यह बात निश्चित ही प्रेरणादायी हैं । अर्थिक कठिनाई के कारण आत्महत्या की बात करनेवाले जन्म से ही मृत्यु की छाया में फिरने वाले बच्चे कितनी प्रसन्नता से जी रहै हैं, यह देखना चाहिए। खास उद्देश्य से प्रेरित युवक कितना सकारात्मक कार्य चला सकता है, यह प्रत्यक्ष देखे कि हम कितने झूठे दुःखों से परेशान तथा विचलित होते है, यह हमारे ध्यान में आएगा ।

हिन्दी भाषान्तर : **मधुश्री आर्य**
मो. ६३७७२३७१६०

प्रिन्स हॅरी की मेगन

(वह किसी बडे घर की गोरी राजकन्या नहीं, मिश्र वंश की है, मोडल के रूप में काम करती है । हॉलिवूड में अभिनेत्री है । पहली शादी तोडकर बाहर आई डिव्होर्सी हैं, और मुख्यरूप से स्पष्ट वक्ता है । सीधे स्पष्ट दृढता से बोलती और वैसे ही जीती तथा बरताव करती हैं । ऐसी वह अब रानी के महल में गृहस्थी बसाने चली हैं)

लोकमत ऑक्सीजन टीम –

सिण्ड्रेला की कथा वर्तमान काल में सत्य सिद्ध होती हो, ऐसा जीवन उसके हिस्से आया है ।

अन्तर इतना है कि सिण्ड्रेला की कथा की सिण्ड्रेला गरीब, बेचारी, लाचार, शकल, सूरत खास नहीं, ऐसी एक सामान्य कनया थी इसका वैसा नहीं है ।

मेगन मर्कल, इंग्लेंड के राजपुत्र प्रिन्स हॅरी से उसकी सगाई हुई है और मेगन अब रानी के राजमहल में जानेवाली है । यह अगर सत्य है तो मेगन किसी बडे राजधराने से संबंधित सुन्दर राजकन्या नहीं उलटा वह एक सर्वसामान्य घर से आई हुई कन्या है । मिश्रवंश की है और एक विवाह तोडकर फिर से जीना शुरू करती हुई तलाकशुदा है । इतना ही नहीं अपितु वह सुप्रसिध्द मॉडेल है और हॉलिवुड की लोकप्रिय अभिनेत्री है । उसकी अपनी इस तरह की पहचान है । उसके हॉलिवूड में सेलिब्रिटी अभिनेत्री, मॉडेल होना तो ठीक पर मेगन का उससे भी अलग एक परिचय है कि वह सीधे स्पष्ट बोलती है वैसे ही, जीती है । आज तक वैसे ही जीती आई है और इसीलिए ब्रिटिश राजपुत्र ने उसे पत्नी के रूप में चुनने के बाद इंग्लेड के साथ साथ अमेरिका में भी चमक रही हैं ।

कृष्णवर्णीय मां की कोख से अमेरिका में जन्मी यह कन्या हैं । पिता गौरवर्ण पर डच आयरिश रक्त के। उसकी माता डोरिया योग इन्स्ट्रक्टर का काम करती थी । मेगन छह साल की थी तब उसके मां–बाप अलग हो गए थे ।

एकबार अपने एक लेख में मेगन ने लिखा था । भिन्नवंशीय रक्त धमनियों में लेकर जीना, स्वयं ही स्वयं की पहिचान प्राप्त करना यह आसान नहीं था । एक तरफ अत्यन्त धक्कादायक बेचैन करनेवाली, अचम्भे में डालनेवाली जिंदगी हिस्से में आई थी और दूसरी तरफ दो संस्कृतियाँ दो वंश, दो वृत्तियों की सीमारेखा पर खडे होकर जीवन खिल रहा हैं ।

पर सारा कुछ बढती उमर में आसान नहीं था उसके लिए । उसके पिता कृष्णवंशीय आफ्रीका के दिखते थे । मेगन सांवली पर कॉकेशियन दिखती थी । कक्षा

में बच्चे क्या, आगे कॉलेज में भी उसे पूछा जाता था कि यह सचमुच तुम्हारी सगी मां है क्या ? रंग की वजह से ऐसे अर्थहीन प्रश्न उसे बहुत बार सुनने पडे पर आज तक की यात्रा में इन मां–बेटी ने एक दूसरे का मजबूती से पकडा हाथ छोडा नहीं । सोशल वर्क और कम्युनिकेशन विषय में मेगन ने ग्रेज्युएशन किया । पार्टटाइम जॉब वह कॅलिग्राफी का भी करती थी ।

टेलिव्हिजन के एक एपीसोडने उसे स्टार बना दिया । पर उसका स्टारडम तो बहुत पहले ही शुरू हो गया था, जिसकी व्हीडिओ क्लिप अब व्हायरल हैं । इस व्ही.डि.ओ में के भाषण में मेगन जो कहती है वह किस्सा तो आश्चर्य में डालनेवाला हैं । वह कहती है, मैं २१ वर्ष की थी । दुर्घटना में, अनजाने में एक बहुत बडी उस समय मैंने मेरे अबोध तथा अज्ञानतावश कर दी । हमें शाला में टी.व्ही पर बच्चों के लिए कुछ कार्यक्रम दिखाए जाते थे । उसमें ब्रेक के समय एक विज्ञापन दिखाया गया । बर्तन धोने के एक लिक्विड सोप का विज्ञापन था । उसकी केंचलायन थी '' चिकनी कडाही औ पतीलों से दो हाथ करनेवाले अमेरिका की सारी महिलाओं के लिए ।

यह सुनकर मेरी कक्षा की दो लडकियों ने कहा, सच हैं, औरतों का स्थान रसोई घर में होता है ।

मैं चिढ गई, क्रोधित हो गई । अपमानास्पद लगा यह मुझे । धक्का ही लगा कि महिलाओं के संदर्भ में कोई ऐसा कैसे बोल सकता है ? मैं ग्यरह वर्ष की थी । पर आज भी मुझे याद आती है वह अपमानास्पद भावना मैं घर आई, पिताजी ने मेरा गुस्सा समझ लिया । मजाक में उडाया नहीं मुझे, उलटा मुझे कहने लगे, तुझे कुछ करने की इच्छा है तो कर । तू फिर पत्र क्यों नही लिखती इस संदर्भ में उन्हें ?

मेरे पत्र लिखने से क्या होगा ! अपना कौन सुनेगा ? ऐसा सोचने की उम्र नहीं थी । किसे पत्र लिखें ऐसा सोचते समय मुझे ऐसा लगा कि अमेरिका की प्रथम–महिला को ही क्यों न लिखूं पत्र ? फिर मैंने हिलरी क्लिंटन को पत्र लिखा । किड्स न्यूज प्रोग्रॅम की सूत्रसंचालिका लिंडा एलर्बी को पत्र लिखा । अटॅर्नी ग्लोरीया अलर्ड को भी पत्र लिखा और उस लिक्विड सोप बनानेवाली कम्पनी को भी पत्र भेज कर मेरा क्रोध दर्शाया । पत्र भेजकर मैं भूलगयी थी । पर महिने भर के बाद मुझे आश्चर्यजनक धक्का लगा । हिलरी क्लिंटन ने मेरे पत्र का उत्तर दिया । वह पढकर मुझे कितना आनन्द हुआ वह मैं बता नहीं सकती पीछे पीछे लिंडा एलर्बी और अटर्नी ग्लोरिया ॲलर्ड– इन दोनों के भी उत्तर और किड्स शो करनेवाले चेनल के पत्रकार बडी व्हॅन लेकर मेरे घर मेरी (मुलाकात) साक्षात्कार लेने आ गए । उस नाबालिग उम्र में की हुई छोटी सी कृति का ऐसा व्यापक परिणाम मैंने उस उम्र में अनुभव किया और उसके भी आगे जाकर

एक बात हुई । लिक्विड सोप बनाने वाली उस कम्पनी ने अपने विज्ञापन की केंचलाइन ही कुछ दिनों में बदल डाली ।

''चिकनी कडाही और पतीलों से दो हाथ करने वाली सभी अमेरिकन्स के लिए''

'विमेंन' ऐसा शब्द हटाकर 'पिपल' ऐसा शब्द उन्होंने मान्य किया । बर्तन साफ करने का काम सिर्फ औरतों ने ही करना ऐसा नहीं है ऐसा उनके सामने आया ।

औरतों को सम्मान का स्थान प्रत्येक पंक्ति में मिलना चाहिए । उस पंक्ति में बैठने का निमंत्रण मिलना चाहिए । और ऐसा स्थान मिलता नहीं । अब स्त्रियों को अपनी पंक्ति स्वयं बनाने की हिम्मत जुटानी चाहिए... अब मुझे ऐसा लगता है कि समानता के विषय में ऐसा सिर्फ बोलने में कुछ अर्थ नहीं, उपयोग नहीं । उस विषय में अपना अटल दृढ विश्वास चाहिए । और सिर्फ विश्वास होने का भी लाभ नहीं, उसके लिए हमें कुछ करना चाहिए और वह भी आज, अभी से ।

मेगन का यह दो तीन मिनट का भाषण अर्थात उसके विचारों की एक झलक उत्तम अभिनेत्री के रूप में उसकी पहिचान है ही 'सूट्स' इस धारवाहिक में उसका अभिनय संसार भर में प्रसिध्द हुआ । उस समय उसने विवाह किया । परन्तु दो वर्ष से ज्यादा उसकी गृहस्थी चली नहीं और तलाक हो गया और आज एक तलाकशुदा रानी के रिश्तेदार से विवाह करके सीधे बंकिगहम पैलेस में गृहस्थी बसाने चली है ।

ऐसा लग सकता है कि विदेश में क्या तलाकशुदा का विवाह क्या विशेष ?

आजकल नहीं है, परन्तु ब्रिटेन की रानी के महल में वह हैं क्योंकि आज भी ब्रिटिश राजघराने में तलाक मान्य नहीं है। राजघराने में तलाक ही निषिध्द है । प्रिन्स डायना ने यह नियम तोडने की हिम्मत दिखाई । स्वतंत्रता की आशा के लिए उसने बहुत बडी कीमत चुकाई और अब इतने वर्षों के बाद एक तलाकशुदा युवती विवाह करके इस महल में आई हैं । वह भी कृष्णवंशीय मां की, आयरिश वंश के पिता की मिश्र रक्त की कन्या फिर भी ब्रिटिश समाज की दृष्टि से भी एक बहुत बडी घटना है और यह सब समझबूझकर मेगन मर्कल हॅरी का हाथ खुल्लम-खुला हाथ में लेकर संसार से सामने जारही थी ।

कुछ वर्ष पहिले सहेली के साथ यूरोप ट्रिप को गई हुई मेगन ने बकिंगहम पेलेस के सामने बडी उत्साह से फोटो खिचवायी थी ।

कुछ महीनों में वह बहू बनकर इस महल में जा रही थी ऊपर से देखने में सिण्ड्रेला की कहानी लगती है फिर भी यह कहानी सिण्ड्रेला की नहीं है ।

-यह सत्य हैं।

(लोकमत ऑक्सीजन से साभार)

भाषान्तर : **मधुश्री आर्य**

मो. ७३८७८६०३९६

विशेष समाचार

आंतर भारती की राजस्थान यात्रा
तप्त भूमि में कुछ शीतल क्षण

– संगीता देशमुख

हम, आंतर–भारती परिवार को मई के महीने को लेकर बडी उत्सुकता होती है! मई के महीने में, आंतरभारती की दर्शन यात्रा का एक अनूठा अनुभव है, जिसे सहेजा और याद किया जाता है! विभिन्न स्थानों के लोग एक साथ आते हैं और सचमुच इस यात्रा का आनंद लेते हैं। हर साल हम महाराष्ट्र से बाहर जाते हैं, वहां पर्यटन करते हैं, भले ही यह पूरा नहीं होगा लेकिन वहां की संस्कृति का जितना हो सके अध्ययन करना, विभिन्न स्थानों के सदस्यों के साथ घुलना–मिलना, आंतरर भारती के लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश करना, यह यात्रा ऐसे कई कारणों से समृद्ध हो जाती है।

इस साल यात्रा राजस्थान के लिए तय की गई थी। राजस्थान में भीषण गर्मी को देखते हुए किसी के लिए भी आसानी से इस यात्रा की तैयारी करना संभव नहीं था। लेकिन आंतरभारती परिवार के आपसी प्रेम और आत्मीयता और इस यात्रा के पिछले अनुभव को लेकर इस यात्रा का एक अलग ही उत्सुकता थी। हम अनुभव करना चाहते थे कि हमारे अपने देशवासी इतनी तेज धूप में कैसे जीवन जीते हैं। इसलिए उदगीर, वसमत, अंबाजोगाई, पुणे, लातूर, औरंगाबाद, गोवा, मुंबई, लातूर नागपुर, अमरावती, गुजरात, हैदराबाद जैसे विभिन्न स्थानों से आंतर भारती के सदस्य इसमें शामिल हुए थे। हमारे वसमत ग्रुप से २७ लोग प्रतिभागी थे।

आठ मई को उत्तररात्र मेंथा ने तीन बजे के दरम्यान हैदराबाद–जयपुर ट्रेन से रवाना हुए । हम सबने सुबह का ब्रेकफास्ट, लंच और डिनर साथ में प्लान किया था। एक–एक कर दशमी, चपाती, धपाटी, चटनी, दही, छाछ, लड्डू, चिवड़ा, शंकरपाले का जिम्मा लिया था । खाने, अंताक्षरी खेलने, गपशप करने में सफर मजेदार रहा। हमें पता भी नहीं चला कि राजस्थान में हमारा उतरने का स्थल अजमेर कब आ गया। हम लोढ़ा धर्मशाला में उतरे, वहाँ के कमरे सभी सुविधाओं से पूरे थे। हम सभी अब आंतर भारती दिवस मनाने के लिए तैयार थे ।

१० मई को आंतर–भारती दिवस के रूप में जाता है। यदुनाथ थत्ते का स्मृतिदिवस तथा साने गुरुजी द्वारा पंढरपुर के मंदिर में दलितों के प्रवेश के लिए दिए गए संघर्ष के सफल अंत चिह्नित दिनभर यही था। राष्ट्रीय बैठक, सर्वसाधारण सभा, व्याख्यान, सदस्यों का स्वपरिचय, स्थानीय मुख्य अतिथियों का वक्तव्य जैसे रंगारंग एवं बहुआयामी कार्यक्रम का समापन हुआ। स्थानीय विधायक डॉ. बाहेती के मनोगत के साथ बलशाली भारत होवो इस विषय पर उमेश श्रीवास्तव, संगीता देशमुख, अमर हबीब का व्याख्यान हुआ। परिचय डॉ. डी.एस. कोरे और पांडुरंग नाडकर्णी ने अध्यक्षीय समापन किया। संचालन संजय कुमार माचेवार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मनिषारानी ने किया। मधुश्री आर्य को वरिष्ठतम उपस्थिति के रूप में सम्मानित

किया गया।

अजमेर

दि.११ मई बहुप्रतीक्षित दिन है। सब लोग तैयार होकर सुबह ६ बजे ख्वाजा गरीब नवाज दरगाह के दर्शन के लिए पहुंचे। हमारे देश में जैसे दौलत है, वैसे ही गरीबी भी है। सभी धर्मस्थलों के बाहर जो घोर गरीबी है, वह केवल अलग वेश में यहां भी नजर आई। सुबह-सुबह छोटे-छोटे बच्चे, विकलांग भीख मांग रहे थे।भगवान चराचर में हैं तो क्यों एक वक्त के भोजन के लिए अपने ही दर पे उनकी इतनी दयनीय अवस्था क्यों करता है! इसपर हम शब्दहीन थे । वहां से आने के बाद हम लोग नाश्ता करके अजमेर दर्शन के लिए निकल पड़े।सड़क दुतर्फा बबूल पेड से भरी थी।सूखी रेत में ये बबूल अपना वजूद कायम कर रहे थे।राजस्थान यानी हमको तपती गरमी याद आ जाती है। दुनिया के सात अजूबों की प्रतिकृतियां एक ही जगह देखने को मिलती हैं।

पुष्कर

वहां से पुष्कर में भगवान ब्रह्मा का (एकमात्र मंदिर) देखा।पुष्कर सरोवर देखा। मैं गर्मी कह रही था, लेकिन हमारे फोटो सत्र और खरीदारी भी चल रही थी। हमारी यात्रा को इतना सुहावना बनाने में अहम भूमिका निभाने वाले एक शख्स हैं राजू जांगिड़, जो अंबाजोगाई के रहने वाले हैं लेकिन मूल रूप से राजस्थान के हैं। पुष्कर देखने के बाद हम राजू जांगिड़ के रतनास (जिला नागोर) गांव गये।

रतनास

गांव छोटा है लेकिन लोग बड़े दिल वाले हैं। उन्होंने हमें डेढ़ सौ लोगों का गर्मजोशी से स्वागत और आतिथ्य दिया, हम कौन और कहां से हैं, लेकिन उनके बेटे की पहचान है,इस एक मात्र आंतरिक धागे को पकडकर उनके परिवार के २५-३० सदस्य, पुरुष और महिलाएं, हमारी सरबराई के लिए वहां थे। बिजली गुल होने की स्थिति में गर्मी से होने वाली असुविधा से बचने के लिए कूलर, जनरेटर की व्यवस्था की गई है। राजस्थानी आहार विशेष दाल बाटी, मीठा चूरमा, सलाद, बूंदी का रायता, सांगरी, सभी ने जी भर कर इसका आनंद लिया। परोसने के लिए पूनम (राजू जांगिड़ की बेटी) और गांव वाले थे। पूनम के उत्साह को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। वहां की महिलाओं से हमारी बातचीत हुई। उनकी संस्कृति और परंपरा को जाना। समाज में महिलाओं की स्थिति लगभग हमारे जैसी ही है। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा १०वीं से १२वीं कक्षा से आगे नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए घूंघट अनिवार्य है। जो महिलाएं शहर में चली गई हैं, उन्हें थोडाबहुत स्वतंत्रता है। बाल विवाह पूरी तरह से बंद नहीं हुए हैं । गरीब परिवारों में भी आज भी बालविवाह होते हैं। ये लोग बहुत मेहनती और वत्सल लगते थे। शुरू में उन महिलाओं को हमारे साथ कुछ अलग महसूस हुआ होगा। बस वे हमें देखकर मुस्कुरा रहे थे और हम उन्हें देख कर। लेकिन जब हमने उनसे बातचीत की तो हमारा परायापन गायब हो गया। उन्होंने हमारे आग्रह पर अपनी भाषा में दो भक्ति गीत म्हारा जगजांदी आओ, मेरी सबा मेरे रंग बरसाओ गाए। राजू जांगिड़ के माता-पिता को हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष पांडुरंग नाडकर्णी और अमर हबीब ने एक किताब देकर

कृतज्ञता व्यक्त की। उनके परिवार का ढेर सारा प्यार लेकर हम जयपुर के लिए रवाना हुए और रात १०:३० बजे 'राजस्थान समग्र सेवा संघ' जयपुर पहुंचे। वहाँ वहां के अध्यक्ष सवाई सिंह ने बहुत ही परोपकारी भाव से आतिथ्य सत्कार किया । उन्होंने रात के खाने में पूड़ी भाजी और रसगुल्ले की व्यवस्था की थी।

जयपुर

१२ मई को सुबह नाश्ते में सूजी–शिरा, पोहा दिया। वहां से जाने से पहले सवाई सिंहजी को कृतज्ञतास्वरूप गांधीजी की पुस्तक 'सत्याचे प्रयोग' भेंट की गई। इस आश्रम की आधारशिला जयप्रकाश नारायण ने रखी है। यहां गोकुलभाई भट की समाधि है। उन्हें राजस्थान के गांधीजी के रूप में जाना जाता है। समाधि के दर्शन किए। पांडुरंग नाडकर्णी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। देश भर में यात्रा करते समय गांधीजी ऐसे स्थानों पर मिलते रहते हैं और ऋणानुबंध और मजबूत होते जाते हैं। बापू हमारे लिए कितनी बड़ी विरासत छोड़ गए हैं! बाद में हम जयपुर का किला देखने गए। जयगढ़पुर का किला, वहां से रानियों के लिए बने नाहर गढ़ किले के बारे में जानकारी प्राप्त की।वहां से आप पूरे जयपुर शहर को देख सकते हैं। राजस्थान के सभी महल और किले मूर्तिकला और वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। उनकी भव्यता–दिव्यता हमें विस्मयविभोर कर देती है। वहां राजवाड़ा होटल में खाना खाने के लिए रुके। वहां का विशेष आकर्षण यह है कि कुछ स्थानीय कलाकार उस होटल में अपनी कला का प्रदर्शन कर ग्राहकों का मनोरंजन करते रहते हैं। वहाँ एक लड़का और उसका पिता उत्तम लोक गीत, कुछ फिल्मी गीत गा रहे थे। १५० लोगों का खाना देखते ही देखते खत्म हो गया। क्योंकि वे गीत इतने सुरीले थे, कि वहां से पैर ही नहीं हटते थे। लेकिन गुलाबी नगरी देखने की ललक कुछ ज्यादा थी। बाद में हमने जलमहल, हवामहल, जंतरमंतर, सिटी पैलेस जैसे खूबसूरत और उतने ही आकर्षक दर्शनीय स्थल देखे। मैंने सुना है कि मुख्य शहर की सभी इमारतें गुलाबी रंग में रंगी हुई हैं, वहां ऐसा पहले नियम होता था। गुलाबी नगरी की इन विशेषताओं ने मन को बहुत प्रभावित किया, वहां से वे सालासर के लिए रवाना हुए।

सालासर

दि. १३ तारीख को सालासर में सुबह बालाजी मंदिर गये। मंदिर परिसर में और आगे बढ़ते हुए हमने देखा कि हर जगह हनुमान के चित्र और मूर्तियाँ हैं। वहाँ पूछने पर पता चला कि वहाँ हनुमान जी को बालाजी कहा जाता है, नाश्ता आदि करके हम देशनोक के लिए निकल पड़े।

देशनोक

देशनोकस्थित करणी माता मंदिर गए। करणी माता मंदिर याने सुना था कि वहां चूहों के उत्पात से सभी के मन में काफी डर था। वहां कुछ किंवदंतियां सुनीं। कहा जाता है कि यह देवी २१ महीने तक मां के गर्भ में रही। उनका जीवन १५१ साल, ६ महीने, २ दिन का था। उनका सारा जीवन चमत्कारी था इसलिए उन्हें करणी माता कहा जाता है। चूहों को 'काबा' कहा जाता है वहाँ। काबा का मतलब राजस्थानी भाषा में छोटा बच्चा होता है। ये चूहे करणी माता के

बच्चे हैं। पूरे मंदिर में हमारे पैरों के पास इधर उधर चूहों की ही आवाजाही रहती है। परअंदर जाते समय बहुत डर लगता है, लेकिन कुछ अलग ही अनुभव लेने के हिसाब से अंदर गये।। उसकी बाकी की कथा पता नहीं सच है या झूठ हमारे पास धार्मिक मान्यताओं से अधिक अंधविश्वास हैं। तकनीकी के युग में चूहा 'माउस' बन गया लेकिन आज भी चूहे से जुड़े कई अघोरी व्रत हैं। देशनोक में खाना खाने के बाद हम बीकानेर के लिए निकल पड़े।

बीकानेर

शाम को बीकानेर पहुंचे सरदार बीका के नाम पर इस संस्थान का नाम 'बीकानेर' पड़ा। बीकानेर के किले को जुनागढ़ के नाम से जाना जाता है। जुनागढ़ किले की नींव १४७८ में राव बीका ने रखी थी। लेकिन इसे इतना भव्य और सुंदर बनाने का काम १५८९ में राजा रायसिंह ने शुरू किया था। वहाँ एक सुसज्जित होटल कलामंदिर में ठहरे।

सम (जैसलमेर)

दि. १४ मई को नाश्ता करने के बाद हम रामदेवरा के लिए निकल पड़े। बीच में 'बाप' गाँव में छाछ आदि पीकर हम रामदेवरा पहुँचे और वहाँ से गाँव सम पहुँचे। पाकिस्तान सम गांव से केवल ३५ किमी दूर है। थार के मरुस्थल में जहां तक नजर जाती है वहां तक रेत ही रेत नजर आती है। चलते समय एक पैर अंदर रखना और दूसरा बाहर निकालना एक हुनर है।वहाँ कुछ छोटी उम्र के और किशोरवयीन बच्चे भी जीप की सवारी, ऊँट की सवारी के लिए लगे हुए हैं। हमने वहां जीप की सवारी की, ऊंट की सवारी की। जीप चालक से उस समय बात की गई तो शिक्षा के प्रति उसका नकारात्मक रवैया खेदजनक था। उसने कहा कि पढ़ाई से पेट नहीं भरता, बल्कि इस काम से पेट भरता है। न तो गाड़ियाँ और न ही ऊँट उसके अपने थे। यानी वो बच्चे मजदूर थे। हमने पारंपरिक परिधानों में रेगिस्तान में फोटोशूट कराया। यहां तक कि युवा लड़कियां भी उस व्यवसाय में बहुत कुशल थीं। ऐसे लोगों की पीढ़ियां अपना पेट पालने के लिए संघर्ष कर रही हैं।बाल मजदूरों की संख्या बहुसंख्यक है। अफ़सोस की बात है कि शिक्षा का महत्व वहाँ तक नहीं पहुँचता। हमने ऊंट की सवारी की, जीप की सवारी की। हमारे लिए आश्चर्य की बात यह थी कि रात के आठ बजने पर भी दिन अस्त नहीं हुआ।भारत का आखिरी छोर देख आतेसमय बच्चों का अद्भुत ड्राइविंग कौशल, उनकी गरीबी, शिक्षा के प्रति अरुचि, ऊँट , जीप की सवारी का आनंद लिया मन में मिश्रित भावनाएँ थीं। सुम में, जहाँ हम रुके थे, कपड़े के तंबू थे। एक टेंट में ३–४ लोग ठहर सकते हैं।ये टेंट आधुनिक सुविधाओं से भरपूर हैं। वहां रहने का अनुभव अभूतपूर्व था। परिसर में दो–तरफा तंबू, बीच में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए केंद्र । हमारे प्रवेश करने से पहले पारंपरिक तरीके से प्रवेश द्वार पर हमारा सवाद् यअभिवादन–स्वागत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में पारंपरिक लोकगीतों, फिल्मी गीतों, लोकनृत्यों का लुत्फ उठाते हुए गरमागरम भोजन और चिप्स का भी लुत्फ उठाया। अंत में आंतर भारती के कई सदस्यों ने आधी रात तक उनके साथ डांस किया। मनमुराद से आनंद लिया। रात का खाना

दाल–बाटी था। दिनभर के सफर की थकान कब और कहां भाग गई पता ही नहीं चला।

जैसलमेर

दि. १५ मई को सुबह हम नाश्ता करके जैसलमेर के लिए निकल पड़े। से जैसलमेर में 'सोननगरी सुनार' इस किले को देखा। यह किला पूरी तरह से पीले पत्थरों से बना है इस यात्रा की एक ही विशेषता है कि एक दिन पहले हमने गुलाबी नगरी देखी और आज पीली नगरी ! यह किला जीवित किले के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यहां आज भी आबादी जज है। यहां पांच धातु की तोप है। यहां ९९ गढ़ हैं। वहां से चला गया। जैसलमेर के पास युद्ध संग्रहालय है। १०० साल के युद्ध का इतिहास, फिल्मांकन, विभिन्न घटनाओं को वहां स्थापित किया गया। युद्ध में इस्तेमाल हथियार, पाकिस्तान के साथ युद्ध में पकड़े गए टैंक, बंदूकें, राइफलें, वाहन, बंदूकें, दूरसंचार उपकरण देखे गए। १२ मिनट की एक फिल्म थी जिसमें १०० साल पुराने युद्ध के इतिहास को दिखाया गया था और लोग हैरत में खड़े थे.फिल्म देखते वक्त जवानों की आंखों से शोर, बलिदान और बलिदान को देखकर आंसू बह निकले।दस–बारह मिनट बाद सिर सुन्न हो गये । वहां का अनुशासन, साफ–सफाई और साफ–सफाई देखकर मैं दंग रह गये। रास्ते में पोखरण में चाय पी। वहाँ जाने की इच्छा थी, पर वहाँ जाने की मनाही थी। उस दिन जोधपुर में रहे।

जोधपुर

अमर हबीब की सहयोगी गांधीवादी और सेवाग्राम ट्रस्ट की अध्यक्ष वर्धा मूल रूप से राजस्थान की रहने वाली आशादेवी बोथरा १६ मई की सुबह जोधपुर आई थीं। उन्होंने हमारे साथ अपनी मां के साथ एक बहुत ही रोमांचक और प्रेरक यात्रा साझा की। उन्होंने कहा कि देश में नफरत के माहौल को दूर करने के लिए गांधीवादी विचार की जरूरत है। राष्ट्रपति पांडुरंग नाडकर्णी को खादी का धागा, माला , चरखा और आंतर भारती के राष्ट्रीय सचिव डॉ. डी. एस. कोरे को आंतर भारती के कार्य के लिए पांच हजार रु. की दानराशि दी। दातृत्व और कर्तृत्व इस यात्रा में यह एक महान उपहार थे । जोधपुर में मेहरान गढ़ देखा। अन्य किलों की तरह फूलमहल, शीशमहल, जलमहल, झाकिमहल आकर्षक हैं। हथियारों, कपड़ों, गहनों से सुसज्जित एक संग्रहालय है। उसके बाद हम उदयपुर के लिए रवाना हो गये। आज दोपहर का खाना छोड़कर सभी ने केले और सेब खाए। रात का खाना जल्दी खाया और उदयपुर में रुके।

उदयपुर

दि.१७ मई की सुबह शाही वेज बिरयानी का नाश्ता कर सभी बहुत खुश हुए। उदयपुर में एक मोम संग्रहालय का दौरा किया। महात्मा गांधी, शिवाजी महाराज, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सहित कई दिग्गजों की विस्मयकारी मूर्तियां देखीं। भूतलभुलैया, आरसेनगरी का कमाल देखकर छोटे–बड़े जमावड़े भी दंग रह गए। उसके बाद पिचोला झील के किनारे विशाल सिटी पैलेस, जगमंदिर, सहेलियों की बाड़ी, गुलाब गार्डन, अरण्य विलास को देखते हुए हमें अहसास ही नहीं हुआ कि हम राजस्थान की चिलचिलाती धूप में हैं। गुलाब गार्डन में किया था लंच। गुलाब गार्डन में राजू जांगिड़ के बहनोई सुरेश ढाका को छोटेखानी कार्यक्रम के साथ सम्मानित किया क्योंकि

उन्होंने नाश्ता और दोपहर का भोजन बहुत कम कीमत पर परोसा लेकिन बहुत स्वादिष्ट था और हमने सामने ही बगीचे में पारंपरिक कला के एक अद्भुत समारोह का अनुभव किया । छोटा बालक, महिलाओं ने घोरबन नृत्य, चेरी नृत्यम, मारवाड़ी नृत्य जैसे अनेक लोकनृत्य प्रस्तुत किए। साथ ही कठपुतलियों की अद्भुत कला को देखकर आंखें और मन तृप्ति से भर गये और अंत में हमने भी उनके साथ नृत्य किया। वहां से हम चित्तौड़गढ़ के लिए रवाना हो गये।

चित्तौड़गढ़

दि.१८– चित्तौड़गढ़ को देखा १८ मई को। गाइड से नई जानकारी मिल रही थी। मीरा मंदिर, वराह मंदिर, ब्रह्मा–विष्णु–महेश मंदिर सहित ७०० एकड़ में फैले ११३ मंदिर हैं। महाराणा कुम्भा की विजय के उपलक्ष्य में खड़ा किया गया उन्नत विजयस्तम्भ, ९ ग्रहों के रूप में ९ मंजिला मंदिर, रानी पद्मावती द्वारा जोहर हुआ भव्य कुंड, यह सारा इतिहास आँखों के सामने खड़ा था। राजस्थान जाते समय हमारे सामने एक बड़ा सवाल था पानी का! लेकिन इतनी तेज धूप में हर जगह पानी ही पानी था, पानी के नाम पर कोई लूट नहीं थी। वास्तव में, यह यात्रा तप्त भूमि में अत्यंत सुहावने क्षण थे।

यह सब देखते हुए जगह जगह भारी मात्रा में खरीदारी, फोटो सेशन भी बड़े उत्साह में शुरू था। सफर में अंताक्षरी खेलने का खूब मनोरंजन हुआ। अंत में दाल, बाफले और चूरमा का भोजन कर समापन सभा का आयोजन किया गया।

अंतिम पडाव

बैठक में इस भारत दर्शन यात्रा की सुविधाओं और असुविधाओं पर चर्चा की गई। यह निर्णय लिया गया कि इस समय हुई त्रुटियों को अगली यात्रा के लिए मार्गदर्शक बनाया जाए, सभी को समान सुविधाएं मिलें, राजस्थान को समझा जाए और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस यात्रा में भाग लेने वाले पर्यटक न हों बल्कि कार्यकर्ता के रूप में भाग लें। इस मौके पर विनया धूपकर, सुधाकर गौरखेड़े, अंकुश हुडेकर, सुभाष लिंगायत, संगीता देशमुख, प्रो. शिवाजी सूर्यवंशी, अमृत महाजन आदि मौजूद रहे। पांडुरंग नाडकर्णी ने अध्यक्षीय निष्कर्ष दिया। अमर हबीब ने अगले साल पश्चिम बंगाल की यात्रा करने की घोषणा की। सभासंचालन संजय कुमार माचेवार ने किया।

योगदान

इस अवसर पर राजू जांगिड़ ने इस यात्रा के लिए कड़ी मेहनत की,अतः उनको और पंकज महाजन को एक मेहनती कार्यकर्ता के रूप में सम्मानित किया। यात्रा को सुखद बनाने के लिए ड्राइवर और क्लीनर को भी सम्मानित किया गया। इस यात्रा के लिए थ्री एसी बसें और नियोजन के लिए एक कार की व्यवस्था थी। अंतर भारती यात्रा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष अमर हबीब के मार्गदर्शन मंर अंतर भारती यात्रा के राष्ट्रीय समन्वयक संजय कुमार माचेवार ने बहुत ही कम खर्च में यात्रा का शानदार आयोजन किया। यात्रा की ढेर सारी यादों के साथ सभी ने वापसी का सफर शुरू किया।

– **संगीता देशमुख, वसमत**
मो. ९९७५७०४३११

विशेष समाचार

आंतरभारती की राष्ट्रीय बैठक और आंतरभारती दिन का कार्यक्रम अजमेर- १० मई २०२३

हर साल की तरह इस साल भी आंतरभारती की राष्ट्रीय बैठक, आंतरभारती दिन और भारत दर्शन यात्रा का आयोजन किया गया। इस साल भारत दर्शन के तहत राजस्थान का चयन किया गया था। इस वर्ष यह यात्रा राजस्थान में मई की गर्मी में होने से बहुतों ने आनाकानी करते हुए रद्द किया। लेकिन कुछ लोगों ने हिम्मत की। हिम्मत इस अर्थ में कि हम अपने महाराष्ट्र में गर्मियों में एक घंटे के लिए भी बाहर जाना चाहें तो दो बार सोचते हैं। लेकिन कुछ ने सोचा कि हमारे भाई-बहने राजस्थान में रहते हैं, हम देखना चाहते हैं कि वे कैसे रहते हैं, कैसे जीते हैं।

९ मई को हम सुबह तीन बजे के दरम्यान ट्रेन से निकल पडे। बस कमी रह गई थी आर्य काका की! मेरी कल्पना से परे बात थी कि, आंतर-भारती की यात्रा तो हैं लेकिन आर्य काका नहीं थे। हर साल आर्यकाका की प्लानिंग, उनसे बार-बार होनेवाली पूछताछ, एक नहीं, कई यादें पगपग पर आ रही थी। हम उनकी याद करते हुए १० तारीख को सुबह करीब ४ बजे अजमेर स्थित लोढ़ा धर्मशाला पहुंचे। दो-तीन घंटे आराम करने के बाद हम सुबह ८ बजे नाश्ते के लिए तैयार हुए। नाष्ते के बाद विश्वस्त मंडल की बैठक हुई। प्राचार्य पांडुरंग नाडकर्णी जी ने अध्यक्षता की। इसमें मा. अमर हबीब, संगीता देशमुख, डॉ. डी. एस. कोरे, प्रतापसिंह डांगी, मनीषा रानी आर्य, संविदा पंड्या (निमंत्रित) उपस्थित रहे।

अजमेर के महर्षि दयानंद के निर्वाण स्थल पर बने एक बडे हॉल में सभी एकत्र हुए। ठीक ११ बजे प्राचार्य पांडुरंग नाडकर्णी जी की अध्यक्षता में आम सभा अर्थात राष्ट्रीय बैठक हुई।

उदगीर की मनीषा स्वामी ने शुरुआत में 'माणसाने माणसाशी माणसा सम वागणे' यह मराठी की एक प्रार्थना प्रस्तुत की।

आंतरभारती के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सदाविजय आर्य व उज्जैन के श्री कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ को श्रद्धांजलि दी गई।

डॉ. डी.एस. कोरे (सचिव) ने आमसभा का सूत्रसंचलन किया। डी.एस. कोरे ने पिछले साल की रिपोर्ट पढ़ी। गत वर्ष के कार्यों की समीक्षा की गई। पिछले वर्ष 'आंतर भारती दूत के रूप में जिम्मेदारी संभालने वालों की समीक्षा की गई। राम माने (पुणे) ने नासिक में नई इकाई की शुरुआत करायी, इसके लिए उनकी सराहना की।

आंतरभारती के सप्त सूत्र आंतरभारती के काम का विस्तार और गहराई बढाने के लिये कार्याध्यक्ष अमर हबीब ने सात सूत्रीय कार्यक्रम घोषित किया। इन सात सूत्रों के अनुसार आंतरभारती का कार्य चलाया जायगा। ऐसा निर्णय अजमेर में संपन्न राष्ट्रीय बैठक में किया गया।

१) इकाई गठित करना–

देश के हर राज्य में, राज्य के हर जिले में और जिले के हर तहसील में हमे आंतरभारती की इकाईयां (शाखायें) गठित करना हैं। जहां भी ग्यारह सदस्य बने वहां आंतरभारती की इकाई बनानी हैं। आंतरभारती की स्थानिक इकाई और राष्ट्रीय , केंद्र ऐसी रचना होगी। जिला या राज्य कार्यकारिणी नहीं होगी। इस वर्ष १०० इकाईयां (शाखायें) बनाने का हमें संकल्प करना होगा।

२) आंतरभारती दूत–

आंतरभारती की प्रत्येक इकाई में कम से कम एक सदस्य 'आंतरभारती दूत' का काम करेगा। यह दूत किसी अन्य जगह पर ग्यारह सदस्य बना कर वहां कार्यकारिणी गठित करेगा।

३) चिंतन शिबिर–

हर वर्ष चिंतन शिबिर किया जायगा। इसमें ट्रस्टी के अलावा आंतरभारती दूत और इकाई के अध्यक्ष, सेक्रेटरी और एक कार्यकारणी सदस्य सहभागी होंगे। पहला आंतरभारती चिंतन शिबिर आंबाजोगाई (महाराष्ट्र) में किया जायगा।

४) महिला रैली–

३० जनवरी महात्मा गांधी का शाहिद दिन हैं। इस दिन के अवसर पर महिलांओं की रैली निकाली जायगी। हैदराबाद और औरंगाबाद में महिला रैली का इस वर्ष आयोजन किया जायगा। अन्य जगह भी यह आयोजन किया जा सकता है।

५) बाल आनंद महोत्सव–

बाल आनंद महोत्सव का आयोजन करना आंतरभारती के मुख्य कामों में से एक हैं। यह महोत्सव स्थानिक, जिला, राज्य, राष्ट्र इन स्तरों पर किया जा सकता हैं। इस वर्ष का बाल आनंद महोत्सव उदगीर (महाराष्ट्र) में आयोजित किया जायगा।

६) भारत दर्शन यात्रा–

हर वर्ष १० मई को आंतरभारती दिन महाराष्ट्र से बाहर मनाया जाता हैं। उसीके साथ उस राज्य में यात्रा की जाती है। आंतरभारती के भारत दर्शन यात्रा के कारण हजारों लोगो ने अन्य राज्यों का पर्यटन किया हैं। गाव दर्शन, शैक्षणिक प्रकल्प को भेट, जनसंवाद को जोड कर यह यात्रा अधिक मजबूत की जायगी। इस वर्ष बंगाल जाने का प्रस्ताव हैं।

७) राष्ट्रीय निबंध स्पर्धा–

आंतरभारती के विचारो का प्रचार करने के लिये द्विस्तरीय राष्ट्रीय निबंध स्पर्धा का आयोजन किया जायगा।

निबंध स्पर्धा का विषय राष्ट्रीय स्तर पर तय किया जायगा। राष्ट्रीय स्तर पर चुने गये निबंधों को बक्षीस देकर सन्मानित किया जायगा।

आंतरभारती की प्रत्येक इकाई (शाखा) निबंध स्पर्धा का आयोजन करेगी। २ ऑक्टोबर के दिन विशेष कार्यक्रम में स्थानीय बक्षीस वितरण समारंभ किये जाएंगे।

इकाई द्वारा चुने गये तीन निबंध राष्ट्रीय समिति को भेजने होंगे। उनमें से तीन

का चयन किया जायगा। निबंध स्पर्धा के दो विभाग होंगे। १) शालेय छात्र २) खुला दोनों विभागों के लिये अलग विषय दिये जाएंगे।
चर्चा में सहभाग हर्षद भाई रावल (गुजरात), अलका वालचाले (औरंगाबाद) शिवलिंग मठपति (उदगीर), एन. सुहास (गोवा), प्रा. सुधाकर गौरखेड़े (मूर्तिजापूर), अंकुश हुडेकर आदि ने अपने कार्य की जानकारी दी तथा विचार रखे।

अध्यक्ष प्राचार्य पांडुरंग नाडकर्णी ने अध्यक्षीय समापन किया। उन्होंने राजस्थानी गीत सुरंगिनी तू आयी म्हारा देस में गाया। मनीषा रानी आर्य ने आभार व्यक्त किया।

आंतरभारती दिन

दोपहर का भोजन किया। थोड़ा आराम किया। अंतिम सत्र शाम साढ़े पांच बजे शुरू हुआ। यह था आंतरभारती दिन का विशेष कार्यक्रम। उदगीर की कांता कलबुर्गी ने बालसागर भारत होवो और संतोष शीतळकर ने खरा तो एकचि धर्म गाया।

राजस्थान के पूर्व विधायक तथा आर्य सर के विद्यार्थी डॉ. गोपाल बहेती जी की विशेष उपस्थिति रही।

धर्म तो एकही सच्चा, जगत को प्यार देवे हम इसे स्वागत–प्रार्थना के रूप में संविद्या पंड्या, करुणा राखे, रीना माचेवार, प्रेमा सोकळवार ने मधुरता से गाया।

प्रस्तावना में डॉ. डी .एस. कोरे ने कहा कि देश में कई समस्याएं हैं, जिसके लिए सभी को एक साथ होने और अपने मतभेदों को दूर करने की आवश्यकता है। अंबाजोगाई के सदस्य राजू जांगिड़ ने मुख्य अतिथि डॉ. बहेती का परिचय कराया।

डॉ. बहेती ने मनोगत में कहा, स्वामी दयानंद जी ने जीवन भर देश की एकता के लिए संघर्ष किया। देश में एकता बढ़ाने के लिए केवल आंतर्जातीय या आंतर्धार्मिक विवाह ही नहीं किए जाने चाहिए, बल्कि आंतर्राज्यीय विवाह होने चाहिए, तब देश में एकता का निर्माण होगा। हमें बुराई के खिलाफ लड़ना चाहिए,गांधी जी ने कहा कि मैं अंग्रेजों के खिलाफ नहीं।लेकिन अगर वह भारतीय लोगों के साथ अन्याय कर रहे हैं, तो मैं अपने लोगों के साथ हूं। गांधीजी को केवल पढ़कर नहीं चलेगा, उनके विचारों को अमल में लाना होगा। उन्होंने इस बात की सराहना की कि आंतरभारती परिवार इतनी लंबी यात्रा कर आयी है। सदाविजय आर्य को याद करके वे भावप्रवण हो गए। उनकी आंखे गिली हो गयी। उन्होंने आंतर भारती के पदाधिकारियों और मधुश्री आर्य का स्वागत किया।

मधुश्री आर्य को आंतर भारती द्वारा ज्येष्ठ यात्री के रूप में सम्मानित किया गया।

इसके बाद राष्ट्रीय एकात्मता के समक्ष की चुनौतियां इस विषय पर परिसंवाद हुआ।

डॉ गोपाल बाहेती जी ने राष्ट्रीय एकात्मता के मार्ग में आनेवाली बाधाओ की विस्तार से चर्चा की। बाहेती जी ने कहा की गांधी जी ने आजादी आंदोलन में साफ कर दिया था की वह क्या चाहते हैं, आज

गांधीजी के विचारों को हटाया जा रहा हैं। राष्ट्रीय एकात्मता के लिये गांधी– विचार आवश्यक हैं।

उमेश श्रीवास्तव (गुजरात) ने कहा कि गांधीजी का चश्मा लेकर सफाई की बात करना ठीक है; लेकिन गांधीजी की सफाई भीतर से थी, उन्होंने ''माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ'' किताब के बारे में बात करते हुए कहा, इससे ज्यादा ईमानदार आत्मकथन दुनिया में अन्य नहीं देखा जा सकता।

संगीता देशमुख (वसमत) ने कहा, देश जहां आजादी की ७५ वीं वर्षगांठ मना रहा है, वहीं बाल विवाह, महिला शोषण, बेरोजगारी, किसान आत्महत्या जैसी कई समस्याओं से देश अभी भी आजाद नहीं हुआ है। इसके लिए जरूरी है कि युवाओं को आंतर–भारती में शामिल कर उन्हें सक्रिय किया जाए।

अमर हबीब (आंबाजोगाई) ने कहा कि,आंतरभारती यह एक निर्दलीय संगठन है। अराजनैतिक नहीं है। इसका मतलब यह है कि, हम किसीं दल से जुडे हुवे नहीं हैं, लेकिन सत्ता क्या कर रही है, क्या करना चाहिये , इसके बारे में हमारी भूमिका हैं। जिसतरह की राजनीति म. गांधी ने की, हम उसके पक्षधर हैं।

भारत की मतदान प्रणालि गलत है। उसी कारण देश सत्तावाद के कगार पर पहुंचा है। उस बात पर जोर देते हुवे अमर हबीब ने कहा कि जिस दिन महिला और किसान स्वतंत्र होंगे, उस के बाद ही देश में स्थिरता आयेगी।

वर्ग संघर्ष और वर्ण संघर्ष एक भुलावा हैं, यह बताकर उन्होंने कहा कि सर्जक और भक्षक के बीच लड़ाई चल रही है। छ. शिवाजी महाराज, गांधीजी और साने गुरुजी ने महिलाओं और किसानों की समस्याओं के हल करने का प्रयास किया था। यही राष्ट्रीय एकात्मता निर्माण करने का मार्ग हैं।

प्राचार्य पांडुरंग नाडकर्णी ने अध्यक्षीय समापन में सभी वक्ताओं के विचारों को दोहराया। कोई पंजाबी हैं, कोई बंगाली हैं, लेकिन दुर्भाग्य से हम अभी तक भारतीय नहीं बने हैं। यह साने गुरुजी का सपना था कि हर मेहनतकश, किसान, मजदूर, महिला, छात्र मजबूत बने। अध्यक्षजी ने यह कहकर वक्तव्य समाप्त किया कि प्रत्येक सदस्य को मानवता की प्रतिष्ठा बढाने के लिए अपने स्थान–स्तर पर काम करना चाहिए।

मनीषा रानी आर्य ने आभार व्यक्त किया।

आंतर–भारती की राष्ट्रीय बैठक तथा आंतरभारती दिन का कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ और सुनियोजनपूर्वक संपन्न हुए।

– संगीता देशमुख, वसमत

अपनी ऊर्जा को चिंता करने में खत्म करने से बेहतर है, इसका उपयोग समाधान ढूंढने में किया जाए ।

आंतर भारती की अजमेर में हुई राष्ट्रीय बैठक/ यात्रा की कुछ झांकियाँ !

वक्तव्य देते हुए सुधाकर गौरखेडे

वक्तव्य देते हुए सुभाष लिंगायत

धन्यवाद भाषण देते हुए मनीषा आर्य

अजमेर में संपन्न आंतर भारती आमसभा

वक्तव्य देते हुए संजय माचेवार

विवाह सालगिरह के निमित्त अमृत महाजन परिवार ने आंतर भारती के उपक्रम के लिए रू. ५०००/- की दानराशि दी ।

आंतर भारती की बैठक यात्रा में उपस्थित आद. मधुश्री आर्य दीदी

आंतर भारती समारोप सत्र में राजू जांगीड और पंकज महाजन का सत्कार किया गया ।

जून 2023 पंजीकरण 11257/66
डाक पंजीकरण : L2/RNP/OMD/71/2021-23

यात्रा के समापन सत्र में चितोडगढ में वक्तव्य देते हुए संजय माचेवार

जोधपुर में मा. आशा बोथरा तथा अन्य मान्यवरों से भेट

सम (जेसलमेर) का मरुस्थल

विजय स्तंभ, चित्तोडगड

राजस्थानी वेश में

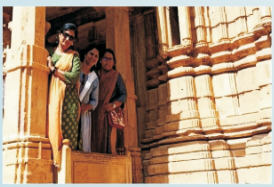

वसमत में मा. अनंत साधू के घर में आंतर भारती दिन कार्यक्रम